National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 08-07-2024, Accepted: 07-08-2024, Published: 22-08-2024
Volume 9, Issue 3, 2024, Page No. 31-33

डॉ0 लोहिया का भारतीय राजनीतिक चिन्तन पर प्रभाव

नईम अहमद सिद्दीकी[1], नीरज कुमार[2]
[1] राजनीति विज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
डॉ0 राममनोहर लोहिया आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक थे, जिन्होनें भारत के स्वाधीनता आन्दोलन और समाजवादी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। गाँधीवादी विचारों को अपनाते हुए एशिया की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर समाजवाद की नवीन और नया कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उनका चिंतन राजनीति तक ही सीमित नहीं रहा, व्यापक दृष्टिकोण, दूरदर्शिता उनकी चिंतन में मुख्य धारा की विशेषता थी। राजनीति के साथ–साथ संस्कृत, दर्शन, साहित्य, भाषा, इतिहास–आदि के विषय में भी उनके विचार मौलिक थे। उनकी विचारधार कभी देश–काल की सीमा में नहीं रही। विश्व रचना और विकास में उनकी अनोखी और अद्वितीय दृष्टि रही। विश्व नागरिकता का सपना देखते हुए मानव मात्र को किसी देश का नहीं बल्कि विश्व का नागरिक माना। विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ0 राममनोहर लोहिया बींसवी सदी के महान समाजवादी थे। उनकी जीवन पीड़िता, शोषित, दुखी जनता को समर्पित था और उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए जीवन भर प्रयत्नशील रहे। उनका मन भारत की गरीबी से विक्षुब्ध था किन्तु कभी भी स्वयं को उन्होनें भारत तक ही सीमित नहीं रखा। समस्त मानव जाति की गरीबी उनके विचार और दुरूख का कारण बनी। उनके सपनों में एक ऐसा विश्व था जिसमें गोरे–काले, गरीब–अमीर, स्त्री–पुरूष, ऊँच–नीच के बीच कोई भेद न हो। 1947 के बाद भारत मे समाजवादी आन्दोलन को बढ़ाने में योगदान दिया। गॉधीवादी समाजवाद के वे प्रखर प्रचारक थे। दिसम्बर, 1955 में डॉ0 लोहिया की अध्यक्षता में भारतीय समाजवादी दल का निर्माण भी हुआ।

मूल शब्दः राजनीतिक चिंतक, स्वाधीनता आन्दोलन, समाजवादी आन्दोलन, दृष्टिकोण, दूरदर्शिता, चिंतन धारा

एक निष्ठावान समाजवादी, डॉ0 लोहिया जनतांत्रिक समाजवाद की विचारधारा में विश्वास रखते थे और सदैव जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों को संसदीय साधनों द्वारा शक्ति दिये जाने के पक्षधर थे। वह सभी प्रकार के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध अहिंसक व सीधी कार्यवाही के भी समर्थक थे।

भारत में आजादी की लड़ाई अर्थात राष्ट्रीय आन्दोलन और उसके बाद की राजनीति को दिषा देने में डॉ0 लोहिया का बड़ा योगदान रहा है और देष में इस समय कई गैर कांग्रेसवादी, गैर कम्युनिस्ट और गैर संघी दल हैं, जो डॉ0 लोहिया को अपना आदर्ष मानते हैं और उनके विचारों पर चलने का दावा करते है। लेकिन विडम्बना यह है कि इन दलों ने डॉ0 लोहिया के राजनीतिक सिद्धान्तों पर चलने के बजाय उन्होंने अपने मनमुताबिक व्याख्या की है और उनके नारों का इस्तेमाल अपने क्षुद्र राजनीतिक हितों के लिए किया है। इसलिए आज यह आवश्यक है कि आजादी के बाद डॉ0 लोहिया द्वारा की गयी राजनीतिक का एक अवलोकन किया जाये और यह जानना भी आवश्यक है कि समाजवादी आन्दोलन के माध्यम से उन्होंनें जो राजनीतिक मंत्र दिये थे, उन पर उनके उत्तराधिकारी होने का दावा करने वाले लोग कितना अमल कर रहे हैं और आज की भारतीय राजनीति में डॉ0 लोहिया की क्या प्रभाव रहा है। भारत और हिन्दी प्रदेषों में पिछड़ो की सरकार तथा पिछड़ी जाती का भारत के शीर्षस्थ राजनीति में आगे होना डॉ0 लोहिया का ही प्रभाव है।

डॉ0 लोहिया ने अपने राजनीतिक दर्षन के माध्यम से देष से गरीबी हटाने, स्त्री–पुरूष समानता, जाति तोड़ने, दाम बांधने, अंग्रेजी हटाने हिन्द–पाक महासंघ बनाने और सबसे अहम यह कि समतामूलक समाज बनाने के लिए कई बड़े आन्दोलन किये। डॉ0 लोहिया का नारा था एक हाथ में फावड़ा और एक पैर जेल में अर्थात रचनात्मक काम के साथ–साथ सिविल नाफरमानी ताकि नौकरषाही और पुलिस की मनमानी पर अंकुष लगाया जा सके। डॉ0 लोहिया ने एक बार कहा था, इसके मुताबिक हिन्दुस्तान की राजनीति के पांच बड़े मकसद हैं– एक है बराबरी, दूसरा जनतंत्र, तीसरा विकेंद्रीकरण, चौथा अहिंसा और पांचवा समाजवाद।

अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे। 1948 में आचार्य नरेन्द्र देव और लोकनायक जयप्रकाष नारायण के साथ मिलकर सोषलिस्ट पार्टी का गठन करने के बाद डॉ0 लोहिया ने स्वतंत्र भारत में पहली बार कांग्रेस पार्टी के विरोध में एक रचनात्मक विपक्ष की षुरूआत की और 1952, 1957 और 1962 के आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत मिलता रहा और उसके सत्ता से हटने की कोई संभावना बनती दिखायी नहीं पड़ी, तो डॉ0 लोहिया ने गैर कांग्रेसवादी की रणनीति बनायी और कांग्रेस विरोधी मतों को एकजुट करना प्रारम्भ कर दिया। 1963 में संयुक्त सोषलिस्ट पार्टी के कलकत्ता सम्मेलन में अपनी इस रणनीति की विस्तृत व्याख्या की। दिलचस्प बात यह है कि उस समय डॉ0 लोहिया की इस रणनीति से उनके दो करीबी सहभागी इसी कारण कलकत्ता सम्मेलन में गये तक नही। अपनी और से उन्होंनें जार्ज फर्नाडिस को इस सम्मेलन में अपनी बात रखने के लिए भेजा। उस समय के आग उगलने वाले युवा नेता जार्ज फर्नाडिस ने सम्मेलन में गैर कांग्रेसवाद की रणनीति वाले डॉ0 लोहिया के प्रस्ताव का जम कर विरोध किया और अनेक तर्क देते हुए कहा कि दक्षिणपंथी संगठनों जैसे तत्कालीन भारतीय जनसंघ और षिवसेना जैसे सांप्रदायिक संगठनों से वह कैसे हाथ मिला सकते हैं? इसके जवाब में डॉ0 लोहिया रात दो बजे भाषण देने के लिए खड़े हुए और जार्ज फर्नाडिस का नाम लिये बिना उन्होंनें कहा कि हमारे एक नौजवान नेता जब मुम्बई बंद कराते है, तो सभी गैर कांग्रेस दलों और संगठनों का समर्थन लेते हैं, लेकिन आज वे मेरे इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे है, डॉ0 लोहिया ने जोड़ा कि मैं नहीं कहता कि गैर कांग्रेसवाद कोई राजनीतिक सिद्धान्त हैं, लेकिन इसे एक रणनीति के तौर पर इस्तेमाल किया जाये,

क्योंकि लगातार तीन चुनाव जीतने के बाद कांग्रेस के बारे में देष में यह राय बनती जा रही है कि ये पार्टी चाहे जो कुछ करे, इसे सत्ता से नहीं हटाया जा सकता; जार्ज फर्नाडिस के भारी विरोध के बावजूद डॉ0 लोहिया का गैर कांग्रेस की रणनीति वाला प्रस्ताव भारी बहुमत से सम्मेलन में पारित हो गया।

विडम्बना यह है कि जो लोग डॉ0 लोहिया की इस रणनीति के विरोधी थे। उन्होंनें गैर कांग्रेसवादी को डॉ0 लोहिया का राजनीतिक सिद्धान्त बना दिया और आज उसी पर अमल करते हुए उन्हें न तो किसी घुर दक्षिण पंथी संगठन से गुरेज हैं, और न ही सांप्रदायिक दायों से डॉ0 लोहिया की गैर कांग्रेसवाद की रणनीति का पहला प्रयोग 1967 के आम चुनाव में हुआ। इस चुनावों में गैर कांग्रेसी दल अर्थात् समाजवादी, वामपंथी, जनसंघ, स्वतंत्र और रिपब्लिक पार्टियां कोई एक संयुक्त मोर्चा बना कर तो चुनाव नहीं लड़ी, लेकिन सात राज्यों में इन दलों को भारी सफलता मिली और कांग्रेस से अलग हुए विधायकों को मिला कर सात राज्यों में संयुक्त विधायक दल का गठन हुआ और गैर कांग्रसी सरकारें बनी। उत्तर प्रदेष में चौधरी चरण सिंह ऐसी ही पहली सरकार के मुख्यमंत्री बनाये गये।

अपने निधन से कुछ दिन पूर्व डॉ0 लोहिया ने अपनी पत्रिका जन के संपादकीय में गैर कांग्रेसवाद और गैर कांग्रेसी सरकारों का मुल्यांकन करते हुए लिखा था कि–गैर कांग्रेसवाद कुछ अपने में ही उलझ गया हैं और उतना नही कर पा रहा हैं, जितनी उससे अपेक्षा थी।

आज के दौर में लोहिया की प्रासंगाकिता यह है कि उन्होंनें इस देष में गरीब दलित षोषित पिछड़े अल्पसंख्यक और महिलाएं चाहे वह किसी भी जाति की हो को आवाज देने का काम किया और अपने हक के लिए लड़ना सिखाया। लोहिया का नारा था, संसोपा ने बाधी गाठ पिछड़े पाबे सौ में साठ यह डॉ0 लोहिया की रणनीति का ही परिणाम था कि उन्होंनें देष के पहले तीन आम चुनावों में लगातार कामयाब होने वाली कांग्रेसी पार्टी का विकल्प तैयार किया और बताया कि यह देष देष किसी एक पार्टी या विचारधारा की बपौती नहीं हैं और वोट के जरिये हैं।

डॉ0 लोहिया कहा करते थे, जब तक केन्द्र में पांच सात बार विभिन्न दलों की सरकारें नहीं बनेगी तब तक देष में सही मायने में लोकतंत्र कायम नही हो सकता। वे पंचायती राज्यव्यवस्था और चौखम्भा के हिमायती थे और भ्रष्टाचार को देष के विकास के लिए एक बडा कोढ माना करते थे। उनका कहना था जब गंगोत्री में संडांध आ जाएगी तो कानपुर और इलाहाबाद के लोगों को पीने के साफ पानी नही मिला सकता उनका आशय यह था कि अगर सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग भ्रष्टाचार में लिप्त होंगें तो निचले स्तर पर भ्रष्टाचार को नहीं रोका जा सकता। ऐसे अनेक कार्य लोहिया जी के थे जिसे आन्दोलित किया था।

डॉ0 लोहिया जाति प्रथा मिटाने के लिए विशेष अवसर की और सामाजिक न्याय की बात करते थे। उनका विकेन्द्रीकरण और विषेष अवसर का सिद्धान्त साथ–साथ चलता था। लोहिया की सभी नीतियां इस तरह एक दूसरे से जुड़ी हुई थी। अंग्रेजी के खात्में को वे लोकसभा, लोकतन्त्र, राष्ट्रीय अस्मिता तथा सामाजिक न्याय की श्रृंखलाताओं की एक कड़ी मानते थे। वे कहते थे कि हर एक बच्चे को हर एक स्कूल में, घर–घर में भी सिखाया जाये कि क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या सिख। रजिया, शेरशाह, जायसी आदि हम सबके पुरखे थे। देषी कौन? और विदेषी कौन? लोहिया की राय में सिल्युकस विदेशी और कनिष्ठ देषी, गजनी विदेषी और शेरषाह देषी, कवायनी हणु विदेषी, राणा सांगा देषी, बाबर विदेषी एवं बहादुरश्षाह देषी इस तरह से हिन्दुस्तान का इतिहास पढ़ना होगा। लोहिया राष्ट्रीयता के सजग प्रहरी थे। वे हिन्दू राष्ट्र, मुस्लिम राष्ट्र, ईसाई राष्ट्र नहीं चाहते थे। वे चाहते थे देष की एकता।

डॉ0 लोहिया ने जाति तोड़ो सम्मेलन में कहा था कि हमारी समाज व्यवस्था में सैकड़ो वर्षो से जन्म के आधार पर छोटे बड़े का भेदभाव रहा है, अतः षिक्षा एवं नौकरी में सभी को समान अवसर नहीं मिल सकता। समाज के कुछ हिस्से ज्ञान से वंचित रहे और कुछ लोगों में ज्ञान सम्पदा एवं राजसत्ता तीनों सिमट गये। ऐसे विशमता भरे समाज में समान अवसर की बात कहना कमजोर, पिछड़े लोगो के साथ अन्याय करना है। अगर एक व्यक्ति बीस कि0मी0 आगे और एक व्यक्ति बीस कि0मी0 पीछे हो तो उनके दौड़ की प्रतियोगिता कराने का कोई अर्थ नहीं जब तक पीछे वाले को आगे वाले की बराबरी में न लाया जाये। पीछे वाले को विशेष अवसर देकर आगे वाले की बराबरी पर लाना ही विशेष अवसर का सिद्धान्त है। आजादी के बाद सबसे पहले लोहिया ने अपनी संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का अध्यक्ष स्वर्गीय रामसेवक यादव को बनाया था। डॉ0 लोहिया की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी पहली राष्ट्रीय पार्टी थी जिसने पिछड़े वर्ग को यह अवसर दिया था। 1967 में जो गैर कांग्रेसी संविदा सरकारें बनी थी, उन सरकारों में भी डाक्टर लोहिया ने पिछड़ों को विषेष अवसर देने की बात कही थी और सभी गैर कांग्रेसी सरकारों में पिछड़े में पिछड़े वर्ग को 60 प्रतिषत स्थान मिला था।

जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र में लिखा था कि जनता पार्टी सरकार बनेगी तो काका कालेलकर आयेाग (पिछड़ा वर्ग आयोग) की रिर्पोट लागू होगी। जब जनता पार्टी की सरकार ने पिछड़ा वर्ग आयेाग की रिर्पोट लागू नही की तो लोहिया के अनुयायियों के दबाव में 20 दिसम्बर 1978 को मण्डल कमीषन की स्थापना हुई और इसकी रिपोर्ट कमीशन के वरिष्ठ सदस्य एल0 आर0 नाईक की रिपोर्ट के साथ 31 दिसम्बर 1980 को आयेाग में भारत के राष्ट्रपति को सौप दी। 13 अगस्त 1990 को तात्कालीन प्रधान मंत्री श्री विष्वनाथ प्रताप सिंह ने मण्डल आयोग की संस्तुतियों के आधार पर कार्यालय अधिसूचना जारी करके पिछड़े वर्गो को 27 प्रतिषत आरक्षण दे दिया।

चुनाव सभाओं में डॉ0 लोहिया समान सिविल संहिता का समर्थक थे। बहुविवाद को उचित नहीं मानते थे। वोटों के लिए या वोट बैंक के लिए उन्होंनें अपनी राय कभी नही बदली। समान सिविल संहिता के प्रष्न पर चुनाव सभाओं में अगर वे चुप भी रह गये होते तो 1967 के चुनाव में उनके सांसदों तथा विधायकों की संख्या दोगुनी हो गयी होती। डॉ0 लोहिया के अनुयायियों को इससे सबक लेना चाहिए।

लोहिया जी शासकों और सत्ताधारियों के लिए आतंक और हर गरीब के हौसला और पददलितों के प्रवक्ता थे। हर अन्यायी के लिए उनकी आंख के डोरे लाल और प्रत्येक दुखी के लिए उनकी आंखे गीली और संवेदन षील थी।

डॉ0 लोहिया के जीवन में ऐसा लगता था जैसे अन्याय और पाखण्ड के विरूद्ध उनका क्षोभ सिर्फ उनके अन्दर की भावना न रहकर, उनके रक्त, मांस तथा स्नायु तन्तुओं को झंकृत कर दिया करता था और यह स्थिति उनके जीवन और कार्यशैली की मूल भावना बन गयी थी। उनकी उस वृति के रूप को देखकर उनके अभिन्न राजनीतिक साथी अशोक मेहता, एन0जी0 गोर, एच0वी0 कामथ, एस0एम0 जोषी, कर्पूरी ठाकुर, रामानन्द मिश्र आदि अवाक हो जाते थे।

एक बार लखनऊ में आचार्य नरेन्द्र देव के निवास पर जब वे एक कमरे में विश्राम कर रहे थे उन्हें अकेला पाकर रामनन्दन मिश्रजी ने पूछा कि डॉ0 साहब आपकी इस आग का इतिहास स्त्रोत कहाँ से हैं, मुझे लगता है कि आपके जीवन की किसी घटना में इसका राज छिपा हैं, इस पर डॉ0 लोहिया ने जवाब दिया कि मैं चार वर्ष का बच्चा था उस समय ही मेरे साथ खेलने के लिए धनिकों के बच्चे आते, लेकिन उनका व्यवहार मेरे अन्दर चोट करता था तथा 7–8 वर्ष की उम्र में ठीक इसी प्रकार कलकत्ता के लखपतियों के बच्चों को भी देखकर और जब मैं कुछ वयस्क

हुआ तो मेरे लिए नेताओं का पाखण्ड और अवसरवादिता ने इस अग्नि में घी की आहुति दी। इसी भाति ही मेरे अन्दर खड़ी हुई शोषित और पिछड़े वर्गो के उपर होने वाले सामाजिक और आर्थिक अत्याचारों के खिलाफ उनके विद्रोह की भावना और इस भावना का प्रादुर्भाव उनके बचपन में ही मां के मृत्यु के बाद यह हुआ।

डॉ0 लोहिया के दर्षन और चिन्तन की व्याख्या आगे के समाजवादी अपने तरीके से करते हैं, जिसमें समाजवादी की जगह अब उनका निजवाद भी आ गया है। सत्ता एवं कुर्सी के मोह ने उन्हें सामाजिक न्याय के रास्तों से कोसो दूर हटाकर महाभारत के धृतराष्ट्र की तरह अन्धा बना दिया है। नीरबल जनता के बीच मंच और माइक हाथ में आने पर वे क्या बोल रहे हैं, इसका उन्हें ज्ञान नहीं हैं। सिर्फ एक ही कार्यक्रम उन्हें मालूम है कि सत्ता के गलियारे में वे कैसे जल्दी पहुंच जाय। काष! आज के ये समाजवादी इस बात को समझ सकते कि समाजवाद एक सच्चाई हैं, जो शुद्ध विचारों और मस्तिष्क की उपज हैं, समाजवाद वर्ग विहीन समाज की स्थापना हैं और वह प्रचलित समाज का इस प्रकार संगठन करना चाहता हैं कि आपसी, परस्पर विरोधी शोषक और शोषित, पीड़क और पीड़ित वर्गो का अन्त हो जाये और आपसी सहयोग के आधार पर व्यक्तियों का एक ऐसा समूह बन जाय जिसमें एक व्यक्ति की उन्नति का अर्थ दूसरे व्यक्ति की उन्नति भी होता।

आजादी के कुछ दिन बाद वर्ष 1954 में देष के एक हिस्से ट्रानकोर को चीन में समाजवादियों की पहली सरकार बनी थी जिसके मुख्यमंत्री भानुल्लिई थे। उस समय समाजवादी विधायकों की यह स्थिति थी कि कोई मंत्री पद लेने को तैयार नहीं था। इसका कारण यह था कि मंत्रियों के वेतन भत्ते और राजकीय सवारियों से चलने पर बहुत कठिन नियमों का पालन करना पड़ता था। 3 कि0मी0 से अधिक मंत्रीजी की गाड़ी चलने पर उसका पैसा सरकार के खजाने से नहीं बल्कि मंत्री जी को अपने पास से देना पड़ता था। तनख्वाह भी फिक्स था। सरकार चल रही थी। अकस्मात मजदूर आन्दोलन हुआ और उग्र भीड़ पर पुलिस ने गोली चला दी फलतः एक दो मजदूरों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से उत्तेजित होकर डॉ0 लोहिया ने कहा कि इस सरकार को इस्तीफा देना चाहिए। आचार्य नरेन्द्र देव तथा अन्य नेताओं के काफी समझाने पर भी लोहिया अपनी बात पर अड़े रहे और पार्टी से अलग होना मंजूर था सिद्धान्तों से समझौता उन्हें मंजूर नहीं था।

लोहिया दर्षन का सार तत्व सप्तक्रांति में निहित है जिसमें शक्ति लोक नायक जयप्रकाष के आन्दोलन से मिलती है। सप्तक्रांति का अर्थ हैं नर–नारी की समानता, रंगभेदों पर आधारित विषमता की समाप्ति, जन्म तथा जाति पर आधारित असमानता का अन्त, स्त्री सम्पति से जुड़ी आर्थिक असमानता का नाष, निजी स्वतंत्रता पर होने वाले अतिक्रमण का मुकाबला आदि है।

डॉ0 राममनोहर लोहिया इतिहास, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और राजनीति–विज्ञान के अत्यन्त उच्चकोटि के विचारक थे। उनके जीवन का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो जिसे उन्होनें अपनी मौलिक प्रतिभा से स्पर्श न किया हो। मानव–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के सम्बन्ध में उनका अपना एक दृष्टिकोण और विचार है। भारतीय संस्कृति से न केवल उन्हे अगाध प्रेम था बल्कि देश की आत्मा को उनकी जैसी गहराई के साथ समझने वाले लोग भी इस देश में बहुत कम हुए है। स्वतन्त्रता के बाद उन्होनें गांधी जी द्वारा दर्शाए गये मार्ग पर चलकर समाजवाद को लाने के लिए सत्त प्रयास किया। मार्क्सवाद और गॉधीवाद का भली–भांति अध्ययन कर दोनों की त्रुटियो को दूर करके नवीन समाजवाद की कल्पना की। डॉ0 लोहिया भारत के किसानो एवं मजदूरों के अधिकारो के संरक्षक थे। स्त्री, आदिवासी शूद्र, हरिजन, मुसलमान के उद्वार के लिए निरन्तर संघर्ष किया। उनका यह संघर्ष दलीय राजनीति या चुनावी राजनीति का अंग नही था। सही मायने में वे समाजवादी आन्दोलन के मुख्य स्तम्भ थे। प्रत्येक बात को उन्होने भारत की अखण्डता की दृष्टि से सोचा। उनके चिंतन की विशेषता इस बात में थी कि उन्होनें समाजवादी चिंतन की समस्याओं को एशियाई दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया। भारत में भी लोकतंत्रीय समाजवाद को बढ़ावा देने में उनके समाजवादी चिंतन का विशेष स्थान है।

बहुमुखी क्रान्तिकारी दर्शन के प्रणेता डॉ. राममनोहर लोहिया अन्याय का प्रतिकार उनके चिंतन की बुनियाद रहा है। वर्तमान व्यवस्था के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक आदि सभी पहलुओं पर उन्होनें प्रहार किया। उनका स्पष्ट मत था कि भारतीय समाज को जब तक सामाजिक समता प्राप्त नहीं होगी तब तक आर्थिक समता का कोई अर्थ नहीं। उनकी आर्थिक नीतियाँ किसी भी देश को विकास के मार्ग पर ले जा सकती है। उन्होंने चौखम्बा राज्य की जो योजना प्रस्तुत की उसमें स्पष्ट है कि वे समाजवाद को प्रजातन्त्र के बिना अधूरा मानते थे। वर्ण और वर्ग की यथार्थवादी व्याख्या करके उन्होनें वर्णहीन और वर्गहीन समाज का नक्शा सामने रखा।

डॉ0 लोहिया का चिंतन विश्व–शान्ति के उद्देश्य का प्रतीक है। उन्होनें विश्व व्यवस्था की जो रूपरेखा प्रस्तुत की वह उनके चिंतन की ऊँचाइयों को बताती है जिस नवीन सम्यता की तस्वीर हमारे सामने रखी उसे देखने से पता लगता है कि लोहिया एक परम्परावादी समाजवादी नहीं बल्कि परिवर्तन और प्रयोग से अपने चिंतन को जीवित रखे हुए थे। भविष्य में देश की समस्याओं का समाधान करने में उनके विचारों की प्रासंगिकता मान्य होगी। ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में आधुनिक भारत के लिए उनका चिंतन महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ0 लोहिया अपने चिंतन और कर्म की दृष्टि से भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में ही नहीं बल्कि भारतीय समाजवादियो में लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना करने के प्रयत्न करने वालो में सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित है। उन्होनें रंगभेद, परम्परावाद, जातिवाद, वर्णवाद, साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता आदि पर ही प्रहार नहीं किए बल्कि लोकतांत्रिक समाजवादी समाज–व्यवस्था की स्थापना के लिए भारतीय–विश्व परिस्थितियों के अनुकूल सृजनात्मक चिंतन–पद्धति का निर्माण भी किया। राष्ट्रवाद के साथ–साथ वे अन्तर्राष्ट्रवाद के भी पोषक थे इसीलिए सम्पूर्ण विश्व–मानवता का कल्याण उनका उद्देश्य था। समाजवादी चिंतन और व्यवहार के वे ऐसे प्रतीक थे कि आज भी विश्व–समाजवादियों के ज्योति–स्तम्भ के रूप में उनका मार्ग–प्रशस्त करते रहेगें।

संदर्भ सूची

1. भारत के शासक–डॉ0 राममनोहर लोहिया, पृ0 54.
2. समाजवादी आंदोलन का इतिहास– डॉ0 राममनोहर लोहिया, पृ0 16.
3. प्रमुख राजनीतिक विचारक–डॉ0 डी0एस0 यादव, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई–दिल्ली, पृ0 222–223.
4. भारतीय राजनीतिक चिंतन–डॉ0 बी0एल0 फड़िया, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 350–351.
5. भारतीय राजनीतिक चिंतन–सुषमा गर्ग, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0 295.
6. भारतीय समाजवाद के शिल्पी–मुख्तार अनीस, समाजवादी अध्ययन एवं शोध संस्थान, लखनऊ, पृ0 144–145.